हमारे अभिभावक हमारे व्यावसायिक शिक्षक

डॉ0 अमित शर्मा
(प्रवक्ता)
डायट बदायूँ

उद्देश्य– परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में अध्ययनतरत् छात्र–छात्राओं को स्वाबलम्बी बनाने, रोजगार परक शिक्षा प्रदान करने व शून्य निवेश में व्यावसायिक कौशलों व दक्षताओं के विकास पर बल देने की आवश्यकता है। परिषदीय विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के अभिभावक विभिन्न व्यावसायिक कौशलों में दक्ष होते हैं किन्तु विद्यार्थी उन व्यवसायों को सम्मान की दृष्टि से नहीं देखते और अपने ही अभिभावकों के कौशलों को नहीं सीखते है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अनुशंसाओं में सामुदायिक सहभागिता और विद्यार्थियों के व्यावसायिक कौशलों के विकास पर बल दिया गया है। छात्र–छात्राओं के बहुआयामी व्यक्तित्व के विकास हेतु भी विद्यार्थियों का अभिभावकों से जुड़ाव, अभिभावको का शिक्षकों व विद्यालय से जुड़ाव नितान्त आवश्यक है। इसी के दृष्टिगत जनपद बदायूँ में अभिभावकों को विद्यालयों और विद्यार्थियों से सीधे जोड़ने का कार्य किया गया। शून्य निवेश में ही सामुदायिक सहभागिता व्यासवसायिक कौशलों के विकास हेतु प्रयास किया गया है।

क्रियान्वयन– इस नवाचार में शिक्षक द्वारा जनपद के सैम्पल्ड 05 उच्च प्राथमिक विद्यालयों को चयनित करते हुए उनके प्रधानाध्यापकों को वर्तमान में विद्यालय में अध्ययनरत् कक्षा 03 से 08 तक के विद्यार्थियों के अभिभावकों के व्यवसाय को एक रजिस्टर पर अंकित करने हेतु कहा गया। विद्यालय की प्रार्थना सभा तथा विद्यालयी समय–सारिणी अनुसार विद्यालय में अभिभावकों को एक–एक करके प्रतिदिन अतिथि अध्यापक के रूप में आमंत्रित किया गया। आमंत्रित अभिभावकों द्वारा व्यक्तिगत दक्षता के क्षेत्र जैसे कढ़ाई, सिलाई, बागबानी, वाद्य–यन्त्रों का वादन आदि की जानकारी विद्यार्थियों को दी गयी। इस प्रकार परिषदीय विद्यालयों में अध्ययनरत्

छात्र–छात्राओं के व्यावसायिक कौशल जैसे– मिट्टी के बर्तन बनाना, कठपुतली बनाना काष्ठ का सामान बनाना नृत्य–वादन, यंत्र, सिलाई, कढ़ाई, भोजन पकाना, रोगों से बचाव एवं बागवानी आदि विभिन्न कौशलों का विकास बिना किसी निवेश के व्यावसायिक शिक्षक अभिभावकों द्वारा किया गया।

विद्यार्थियों को कैसियो सीखाते हुए अभिभावक

प्रभाव– इस नवाचार द्वारा अभिभावकों का विद्यालय से जुड़ाव हुआ। अभिभावकों को अतिथि के रूप में विद्यालय में आमन्त्रित करने पर विद्यालय के प्रति व शिक्षकों के प्रति उनका सम्मान और अपनत्व की भावना का विकास हुआ, जिसके फलस्वरूप अभिभावक–शिक्षक सम्बन्ध से मजबूत होने लगे। विद्यार्थियों की व्यावसायिक कुशलता का उन्नयन हुआ और अपने ही अभिभावकों को व्यावसायिक शिक्षक के रूप में देखकर उनको गर्व की अनुभूति हुई। इस प्रकार छात्रों के बहुआयामी व्यक्तित्व के विकास के साथ–साथ सामुदायिक सहभागिता में वृद्धि हुई। परिणामरूवरूप विद्यालय में विद्यार्थियों की उपस्थिति व नामांकन में वृद्धि भी स्पष्ट रूप से दिखने लगी।

विद्यार्थी संख्या–

कक्षा	सत्र 2024–25	सत्र 2025–2026
6	42	50
7	40	54
8	41	34
योग	**123**	**138**